श्री बादल पत्रलेख
माननीय मंत्री
कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता
विभाग, झारखण्ड

श्री हेमंत सोरेन
माननीय मुख्यमंत्री
झारखण्ड

सफलता की कहानी

परियोजना निदेशक, आत्मा
पूर्वी सिंहभूम, जमशेदपुर

संपादक मंडल

संरक्षक

श्री सुरज कुमार, भा०प्र०से०, उपायुक्त-सह-अध्यक्ष,
आत्मा, पूर्वी सिंहभूम

मुख्य संपादक एवं प्रकाशक

श्री मिथिलेश कुमार कालिंदी, परियोजना निदेशक,
आत्मा, पूर्वी सिंहभूम

संपादक

श्रीमति गीता कुमारी, उप परियोजना निदेशक,
आत्मा, पूर्वी सिंहभूम

टंकण एवं साजसज्जा

श्री अर्जुन सोरेन, कम्प्यूटर ऑपरेटर,
आत्मा, पूर्वी सिंहभूम

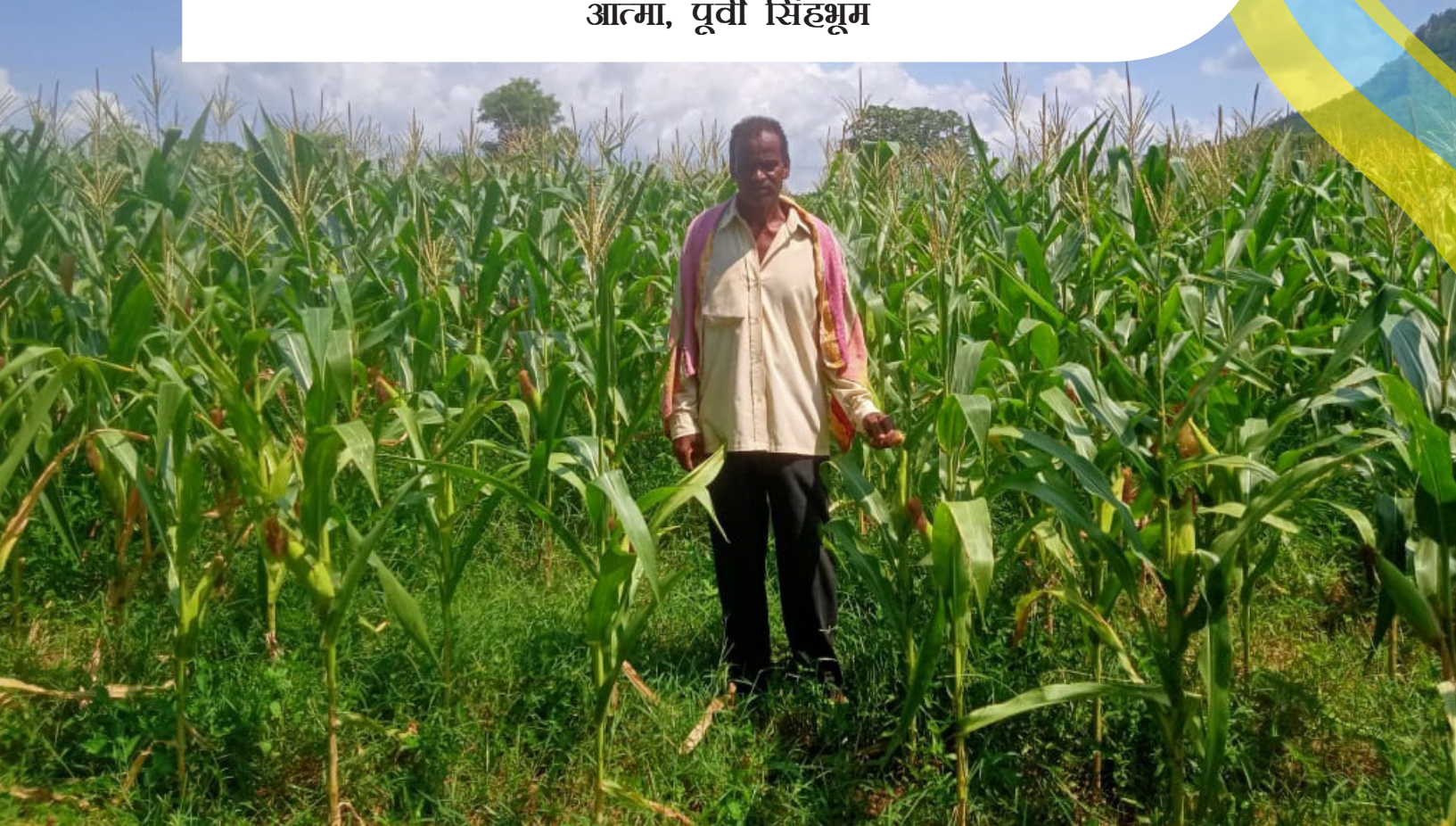

श्री मिथिलेश कुमार कालिंदी,
परियोजना निदेशक,
आत्मा, पूर्वी सिंहभूम

प्रस्तावना

आत्मा, पूर्वी सिंहभूम द्वारा वर्ष २०२० में चलाई गई कृषि गतिविधियों से लाभान्वित एवं विभागीय योजनाओं से जुड़े हुए कृषकों के सफलता की कहानी समर्पित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। इसके माध्यम से आत्मा पूर्वी सिंहभूम द्वारा चलाई जा रही किसानोपयोगी कार्यकलापों एवं उससे लाभान्वित हो रहे किसानों के सफलता से आप सभी को अवगत करने का प्रयास किया गया है। जिला स्तर पर उपायुक्त-सह-अध्यक्ष (आत्मा), पूर्वी सिंहभूम एवं उप विकास आयुक्त-सह उपाध्यक्ष (आत्मा), पूर्वी सिंहभूम एवं राज्य स्तर पर नोडल पदाधिकारी (आत्मा)-सह -कृषि निदेशक, झारखंड तथा निदेशक समेति, झारखंड के नियमित मार्गदर्शन का आत्मा के गतिविधियों को गति देने में उल्लेखनीय भूमिका रही है। कृषि एवं सम्बद्ध विभागों के समेकित समन्वय सहयोग के द्वारा (आत्मा), पूर्वी सिंहभूम अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतू सतत् प्रयत्नशील है और आत्मा परिवार उनके सहयोग का सदा आभारी रहेगा।

मेरा पूर्ण विश्वास है कि कृषकों की सहभागिता एवं आत्मा से जुड़े संस्थानों के सतत् सहयोग से जिले के कृषि परिदृश्य में आत्मा, पूर्वी सिंहभूम कृषक हित में सदा समर्पित रहेगा।

(श्री मिथिलेश कुमार कालिंदी)

भरण-पोषण अच्छा तरीका

इन्द्रजीत किस्कु पिता सिमल किस्कु ग्राम ईटामारा पंचायत दलदली के प्रगतिशील किसान है। पढ़ाई लिखाई करने के बाद इन्होंने खेती को ही अपना जीवीकापार्जन बनाया। इनके परिवार में कुल 8 सदस्य है जिनका भरण-पोषण इन्द्रजीत किस्कु के कंधो में ही है।

इन्द्रजीत 03 एकड़ जमीन पर खीरा, टमाटर, नेनुवा, मिर्चा, फ्रेंचबीन, आदि की उन्नत तकनीक से खेती कर रहे है। अपने खेतों में 3-4 मजदूरों को रोजगार भी दियें है। अपना उत्पाद इन्होंने गालुडीह, घाटशिला तथा जमशदेपुर के साकची, बारीडीह में लगने वाले बाजार में बेचकर मुनाफा प्राप्त करते है। इसके साथ ही 2 एकड़ जमीन पर धान एवं 1 एकड़ जमीन पर सरसों की खेती कर अच्छा मुनाफा कमायें हैं। सरसों का बीज इन्द्रजीत किस्कु को आत्मा द्व ारा संचालित राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजना के तहत निःशुल्क उपलब्ध कराया गया था।

इन्द्रजीत किस्कु कृषि विभाग से विगत 5 सालों से जुड़े है। इन्द्रजीत किस्कु अपने गाँवों के अन्य किसानों को कृषि विभाग द्वारा चलाए जाने वाले प्रशिक्षण, परिभ्रमण, किसान गोष्ठी, फसल प्रत्यक्षण एवं किसान मेला आदि में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते रहे है।

इनका सब्जी उत्पादन से लगभग सालाना 1.50 लाख से अधिक रूपये की आमदनी हो जाता है जिससे इनका परिवार का भरण-पोषण अच्छा तरीका से हो रहा है एवं पारिवारिक स्थिति पहले की अपेक्षा काफी बेहतर है।

सफलता की कहानी

किसान का नाम - मियाराम सरदार
ग्राम - जामदा
पंचायत - जानमडीह
प्रखण्ड - पोटका
जिला - पूर्वी सिंहभूम

मियाराम सरदार खेती करने के पूर्व दिहाड़ी मजदूर का काम करते थे। हमेशा कहीं न कहीं अन्यत्र काम के तलाश में चला जाता था जिस से परिवार से दूर रहकर काम करना पड़ता था। इनके पास 2 एकड़ खेती योग्य जमीन है जिसमें अधिकतर एक ही मौसम में धान की खेती करते थे। सिंचाई का प्रर्याप्त साधन नहीं होने से भी अन्य फसल का उत्पादन करने में कठिनाई होती थी। सिर्फ एक मौसम में धान की खेती से सिर्फ खाने के लिए अन्न का प्रबंध तो कर लेते पर अन्य आर्थिक जरूरतों का पूर्ति करने के लिए नगद राशि का किल्लत होता था। विगत लॉकडाउन के समय में अन्य किसी जगह काम नहीं मिलने से पारिवारिक स्थिति बिगड़ती जा रही थी।

मियाराम सरदार ने अपने ही खेती योग्य जमीन में ही कुछ अनाज फसल आदि लगाने का फैसला किया। लेकिन किसी प्रकार तकनीकी जानकारी एवं मार्गदर्शन नहीं मिलने से खेती-बाड़ी में काम नहीं कर पा रहे थे। तब अपने गाँव के किसान मित्र के संपर्क में आये उनसे कृषि संबंध में लाभ एवं जानकारी के लिए पुछताछ किया। अपने प्रखंड के प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक के सहयोग से विगत रबी में आत्मा संस्थान से राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजनान्तर्गत सरसों बीज प्राप्त किया।

इसी योजना के तहत मियाराम सरदार ने सिंचाई हेतु पाइप 50 प्रतिशत अनुदान पर प्राप्त किया है। पम्पसेट का व्यवस्था कर अभी सिंचाई के लिए दिक्कत नहीं है।

0.50 डिसमिल जमीन में मियाराम सरदार ने सरसों का खेती किया। समय–समय पर आत्मा के प्रसारकर्मी द्वारा उनके प्रक्षेत्र का भ्रमण कर आवश्यक सुझाव दिया जाता रहा है। जिससे मियाराम सरदार ने अच्छा उपज प्राप्त किया। सरसों का साग के रूप में बेचकर लगभग प्रतिदिन 600 से 700 रूपये का आमदनी इनको प्राप्त होने लगा। आस–पास के सप्ताहिक हाट में साग बेचकर मियाराम सरदार ने लगभग 20,000 रूपये कमा लिए हैं।

सफलता की कहानी

किसान का नाम - प्रदीप महतो
ग्राम - पटमदा बस्ती
प्रखण्ड - पटमदा
जिला - पूर्वी सिंहभूम

प्रदीप महतो एक छोटे से गाँव पटमदा बस्ती में रहकर पढ़ाई के साथ–साथ खेती बाड़ी का कार्य में सफलता हासिल किया है। प्रदीप महतो स्नातक की पढ़ाई इतिहास विषय में किये है। छात्र जीवन से ही प्रदीप महतो कमाई एवं रोजगार के बारे में सोचते रहते थे।

जब स्नातक प्रथम वर्ष में थे उसका मनरेगा योजना में सुपरवाइजर का नौकरी लगा। प्रदीप ने दो साल तक नौकरी किया। पढ़ाई पुरा करने के बाद अपने पिताजी के साथ खेती बाड़ी में लग गया।

इस दौरान कृषि विभाग आत्मा के प्रखण्ड स्तरीय कर्मी के संपर्क में आने एवं कृषि संबंधी तकनीकी जानकारी प्राप्त किया। सरकार के किसानोपयोगी योजना के बारे में जाना जिससे प्रोत्साहित होकर प्रदीप महतो ने खेतीबाड़ी को ही जिवीकोपार्जन के तौर पर अपनाने का निश्चय किया।

प्रदीप महतो भूमि संरक्षण विभाग से वर्ष 2018 में अपने जमीन में एक तालाब बनवाया एवं सिंचाई हेतु डीप बोरिंग भी कराया। खेती कार्य को सुलभता से करने के लिए एक ट्रेक्टर ले लिया जिससे प्रदीप महतो धान के अलावा, गेहूँ, टमाटर, फुलगोभी की खेती कर रहे हैं। ट्रेक्टर का प्रयोग स्वयं करने के अलावा अन्य दूसरे किसानों को भी किराया पर उपलब्ध कराते है जिससे उन्हें नगद आमदनी हो जाता है।

इस वर्ष रबी में आत्मा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजना के तहत प्रदीप महतो ने सरसों का बीज प्राप्त किया और अपने 50 डीसमील खेत में लगाया है।

टमाटर, फुलगोभी का अत्याधिक मात्रा में उत्पादन होने से स्थानीय पटमदा, बोड़ाम के हाट में जाकर बेचते है, जमशेदपुर शहर के बाजारों एवं पश्चिम बंगाल में सब्जी की थोक बिक्री कर सालाना लगभग 2.50 रूपये से अधिक कमा रहें है।

कृषि से इतनी आमदनी होने से प्रदीप महतो का परिवारिक जीवन स्तर पहले की अपेक्षा काफी बेहतर स्थिति में है।

प्रदीप महतो अभी खुद का खेत के अलावा आस–पास के दूसरे किसानों का खेत को लीज में लेकर खेती कर ज्यादा से ज्यादा कमाने का योजना बना रहें हैं।

सफलता की कहानी

किसान का नाम	– बैजु हेम्ब्रम
पिता का नाम	– स्व0 चैतन हेम्ब्रम
ग्राम	– चिरूगोड़ा
पंचायत	– मौदाशोली
प्रखण्ड	– धालभूमगढ़
मोबाइल नं0	– 9631475540

बैजु हेम्ब्रम धालभूमगढ़ प्रखण्ड के प्रगतिशील कृषक के नाम से जाने जाते हैं। इनके पिताजी स्व0 चैतन हेम्ब्रम के पास 18 बीघा पुश्तैनी जमीन है। बैजु हेम्ब्रम दो भाई में से छोटे है, एक बहन है। बैजु हेम्ब्रम नवीं तक पढ़ाई किये हैं। इनके दो बच्चा है एक बेटा, एक बेटी। दोनों बच्चे कॉलेज की पढ़ाई कर रहें हैं।

बैजु हेम्ब्रम के पिता अचानक विकलांग हो जाने के कारण घर परिवार का सारा जिम्मेदारी बैजु और इनके भाई के उपर आ गया। बैजु अपने भाई के साथ मिलकर 7.00 बीघा जमीन में धान की खेती कर अपने परिवार का भरण–पोषण में लग गये। अन्य समय में बैजु हेम्ब्रम घर का खर्चा चलाने के लिए अन्यत्र मजदूरी कर लेते। बैजु हेम्ब्रम अपने परिवार के आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने घर पर ही होम टेलरिंग का व्यवसाय करने लगे। अपने साथ गांव के अन्य 13 महिलाओं को अपने व्यवसाय से जोड़े एवं उन्हें स्वरोजगार के प्रति प्रोत्साहित किये। बैजु हेम्ब्रम लगभग डेढ़ बीघा में आधुनिक तकनीक से सब्जी की खेती कर रहे हैं। जिला उद्यान विभाग से सेडनेट प्राप्त कर उसी में करेला, टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च एवं गाजर की खेती कर रहें है। सब्जी का उत्पादन सालों भर हो रहा है। करेला का 1700 पौधा, बैगन का 700 पौधा, शिमला मिर्च का 400 पौधा लगाये थे। सिर्फ करेला की खेती से 50 हजार रूपये का आमदनी हुआ है। लगभग 30 किलोग्राम शिमला मिर्च का उत्पादन हुआ है। बैजु हेम्ब्रम को सब्जी उत्पादन से सलाना 2 लाख से अधिक का मुनाफा हो रहा है। बैजु हेम्ब्रम ने बताया उनके पास नर्सरी में उन्नत किस्म का सब्जी का पौधा खुद विकसित करते है एवं अपने सेटनेट पर स्वयं खेती करते है। नर्सरी में उत्पादित विभिन्न सब्जी के पौधा बेचकर सालाना 1 लाख से अधिक कमातें हैं। आत्मा पूर्वी सिंहभूम के पदाधिकारी एवं प्रखण्ड स्तरीय प्रसार कर्मी से लगातार जुड़कर बैजु हेम्ब्रम को प्रोत्साहन मिलते रहा है। समय–समय पर इनके प्रक्षेत्रों का निरीक्षण कर उन्हें जरूरी सुझाव देते है जिससे बैजु हेम्ब्रम आज एक सफल किसान के रूप में जाने–पहचाने जाते है।

कृषि विभाग एवं आत्मा के सहयोग के अलावा बैजु हेम्ब्रम स्वयं की पुँजी लगभग 01 लाख रूपये खेती–बाड़ी में लगायें है जो उनके सब्जी की खेती के आय को प्रमाणित करता है। बैजु हेम्ब्रम अपने साथ गांव के 5–6 किसानों को भी समेकित कृषि के लिए प्रोत्साहित किये है।

सफलता की कहानी

किसान का नाम – जहरलाल मंडल
गाँव – बालिजुड़ी
प्रखण्ड – गुड़ाबांधा
जिला – पूर्वी सिंहभूम

जहरलाल मंडल कृषक परिवार से संबंध रखते है। तीन भाईयों में सबसे छोटे है। इंटर तक पढ़ाई पुरी करके रोजगार की तलाश में जमशेदपुर शहर में इधर–उधर भटकते रहे, कहीं संतोषजनक रोजगार का साधन नहीं मिला।

परिवार चलाने के लिए बालीजुड़ी नदी घाट में बालू उठाने का काम करने लगे। तीन बच्चे के पिता जहरलाल मंडल परिवार छोड़कर रोजगार के लिए राज्य के बाहर चला गया। वहीं से रूपये भेजता एवं साल में दो–तीन बार ही गाँव आ पाता। दो साल बाहर कमाने के बाद अपने घर लौट आया। नदी घाट से बालू उठाने का काम कर परिवार का भरण–पोषण कर रहा था।

अपने पुश्तैनी जमीन से अपना हिस्सा लेकर धान की खेती करना शुरू किया। अन्यत्र कहीं भटकने से अच्छा है अपने ही खेतों में कड़ी मेहनत की जाए। जहरलाल मंडल को अब धीरे–धीरे खेती में मन लगने लगा। खेती बाड़ी पर सरकार से मिलने वाले सुविधा की जानकारी के लिए अपने पंचायत के कृषक मित्र से मिला। उसके माध्यम से प्रखण्ड के आत्मा कर्मी से संपर्क किया एवं सरकार के द्वार दी जाने वाली कृषि संबंधी लाभ के बारे में जानकारी प्राप्त की।

जहरलाल मंडल को आत्मा द्वारा होने वाले जिला एवं राज्य स्तरीय प्रशिक्षण आदि में भाग लेने का सुझाव दिया जिससे वह कृषि कार्य को बेहतरीन ढंग से कर सकेंगे। आत्मा कर्मी ने उन्हें रबी मौसम में सब्जी एवं दलहन–तेलहन की खेती करने का सुझाव दिया। कृषि विभागीय आत्मा संस्थान से राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजना के तहत उन्हें सरसों का बीज एवं अन्य उपादान मिला। जहरलाल मंडल ने 01 एकड़ जमीन में सरसों लगाया। सरसों का खेती अच्छा हुआ। सरसों का साग बेचकर 15,000/– रूपये मुनाफा कमाया जिससे वह प्रोत्साहित हुए। 01 एकड़ जमीन से उन्हें 13 क्वींटल सरसों प्राप्त हुआ जिससे उसको 40,000/– रू0 आमदनी प्राप्त हुआ। सरसों का उपज से खुश होकर जहरलाल मंडल धान की खेती के अलावा सब्जी का खेती भी करना शुरू किया है।

विगत कोविड महामारी के हालत में जहाँ रोजगार का कोई विकल्प उनके पास नहीं था लेकिन कृषि कार्य से उन्हें बेरोजगारी का सामना नहीं करना पड़ा एवं परिवार का जीवीकोर्पाजन में कोई दिक्कत भी नहीं हुआ।

सफलता की कहानी

किसान का नाम	– अनिल कुमार कुईला
पिता का नाम	– शरत चन्द्र कुईला
ग्राम	– कियाझरिया
पंचायत	– कुमारडुबी
प्रखण्ड	– बहरागोड़ा
मोबाइल नं0	– 6206082236

पूर्वी सिंहभूम जिले के बहरागोड़ा प्रखण्ड के अनिल कुमार कुईला जिन्होंने अपने लगन और मेहनत से कृषि के क्षेत्र में सफलता हासिल किया है। कियाझरिया गाँव के मध्यम परिवार से संबंध रखने वाले 52 वर्षीय अनिल कुमार कुईला का पैतृक जमीन 6 एकड़ है जिसमें 2 एकड़ परती है। 6 एकड़ जमीन में धान का खेती करके अपने परिवार का भरण–पोषण किसी प्रकार हो रहा है। आर्थिक संकट से उभरने के लिए कुछ अन्य स्रोत से कमाने का उपाय तलाशते रहे। इसी दौरान आत्मा के प्रखण्ड तकनीकी सूचना केन्द्र आये और आत्मा के प्रसार कर्मी के सामने अपनी समस्या को रखा। बेकार पड़े 2 एकड़ परती भूमि में कुछ अन्य फसल लगाने का इच्छा जाहिर किया। आत्मा के प्रसार कर्मी ने उन्हें अरहर की खेती करने का सुझाव दिया।

अनिल कुमार कुईला ने 2 एकड़ परती भूमि में अरहर का खेती करना शुरू किया। कृषि के नई तकनीक को समझने और सिखने के लिए आत्मा के द्वारा आयोजित किये जाने वाले प्रशिक्षण में भाग लिया। अरहर का खेती करके उन्हें अच्छा उत्पादन हुआ। अनिल कुमार कुईला को उसी 2 एकड़ जमीन से 5.50 क्वींटल अरहर का उपज प्राप्त हुआ। कुछ मात्रा घर में खाने के लिए रखकर नजदीकी बाजार में बेचकर मुनाफा प्राप्त किया है।

अनिल कुईला का अरहर का खेती देखकर गाँव के बाकी किसान भी दलहन की खेती की ओर प्रोत्साहित हुए है। इस वर्ष अनिल कुईला के साथ-साथ गाँव के किसान को अरहर आधार बीज राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत मुहैया कराया गया। वर्त्तमान समय में कियाझरिया गाँव का अरहर कलस्टर के रूप में पहचान बन गया है।

सफलता की कहानी

किसान का नाम	–	जगदीश सिंह मुंडा
पिता/पति का नाम	–	सनातन सिंह मुंडा
ग्राम	–	कदमशोली
पंचायत	–	जुगीगोपा
शैक्षणिक योग्यता	–	बी0 कॉम

जगदीश सिंह मुंडा एक शिक्षित युवा किसान है। पढ़ाई पूरी करने के बाद उद्देश्य था कि चार्टड आकउंट की पढ़ाई करें। लेकिन पारविारिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण कृषि कार्य में पूर्ण रूप से लग गया। कृषि तकनीक की सही जानकारी नहीं होने से कृषि कार्य नहीं कर पाते थे।

चाकुलिया प्रखण्ड मुख्यालय स्थित कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र में 2018 में आयोजित कृषक गोष्ठी के माध्यम से विभाग से जुड़े एवं कृषि के अन्य तकनीक के बारे में विशेषज्ञों का सुझाव जानने का मौका मिला। 2019 में राज्य स्तरीय कृषक परिभ्रमण में आरा कोरम राँची गये एवं कृषि की बेहतरीन तकनीक, कम पानी में सिंचाई की तकनीक के बारे में जानकारी प्राप्त किया। काफी प्रोत्साहित हुए यह जानकर कि किस तरह कम पूँजी एवं कम जमीन पर कम सिंचाई की सूविधा से खेती–बाड़ी का कार्य किया जा सकता है।

आत्मा के सहयोग एवं तकनीकी जानकारी के द्वारा इन्होंने विगत 2020 खरीफ मौसम में प्रत्यक्षण हेतु ब्रोकली का खेती किया। ब्रोकली बेचकर जगदीश सिंह मुंडा 30 हजार रूपये आमदनी प्राप्त किया। इसी वर्ष 2020 में जगदीश कृषि विभाग से पम्पसेट एवं पावर स्प्रेयर भी अनुदान में प्राप्त किया है जिससे इनका खेती का कार्य अब सुगमतापूर्वक हो रहा है। रबी मौसम में सरसों, बैगन, लौकी, भिंडी, मिर्चा बंध ागोभी का खेती कर लगभग 60,000/– रूपये मुनाफा कमाया है। अभी जगदीश सिंह मुंडा सलाना आय 01 लाख से ज्यादा हो रहा है।

सफलता की कहानी

किसान का नाम	– माधव गोराई
पिता का नाम	– सुबल गोराई
ग्राम	– लावजोड़ा
पंचायत	– भूला
प्रखण्ड	– बोड़ाम
उम्र	– 30 वर्ष
योग्यता	– इंटरमीडियट

माधव गोराई के पिताजी परपंरागत किसान है जिसमें माधव गोराई पढ़ाई के साथ–साथ अपने पिताजी को कृषि कार्य में सहयोग करता है। इनके पास कुल 3 एकड़ जमीन है।

माधव गोराई युवा किसान है। कृषि कार्य में लगनशील होने के साथ–साथ बेहतर कृषि तकनीक को जानने एवं उससे अधिकतम लाभ की प्राप्ति के लिए माधव अपने गांव के आत्मा द्वारा चयनित किसान मित्र से मिले। आत्मा के द्वारा किसानों को मिलने वाले लाभ, तकनीकी सहयोग के बारे में माधव गोराई को बतायें। प्रखण्ड स्तरीय आत्मा के प्रसार कर्मी का सहयोग लेकर माधव गोराई ने तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लिया जो जिला के कृषि विज्ञान केन्द्र में आत्मा के द्वारा आयोजित किया गया था।

इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान कृषि वैज्ञानिकों के तकनीकी मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन से माधव गोराई का हौसला बढ़ा कृषि में आधुनिक तकनीक से खेती करने का।

आज के समय में माधव गोराई धान के अलावा टमाटर, फुलगोभी, बंधागोभी, ब्रोकली, फ्रेंचबीन, मूली, खीरा, परवल का खेती कर 1.50 लाख से अधिक मुनाफा कमा रहें है। जिला उद्यान विभाग से सहयोग प्राप्त कर गेंदा फुल का आधुनिक तरीका से व्यवसायिक खेती कर रहे है।

माधव गोराई को सलाना एक निश्चित आय होने से इनका परिवारिक स्थिति सुखी संपन्न है।

NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

सफलता की कहानी

किसान का नाम	–	मंगल सोरेन
पिता का नाम	–	चान्द्राय सोरेन
ग्राम	–	पारूलिया (रोहनीगोड़ा)
पंचायत	–	पारूलिया
प्रखण्ड	–	मुसाबनी
मोबाइल नं0	–	8340116339

मंगल सोरेन प्रगतिशील किसान के रूप से जाने जाते है। उनके पास लगभग 10 एकड़ जमीन है जिसमें वह 7 एकड़ में धान की खेती करते है एवं 3 एकड़ में धान के अलावा गेहूँ, मक्का, सरसों, चना, अरहर, टमाटर, फुलगोभी एवं बैगन की खेती किये है।

मंगल सोरेन विगत 6 वर्षों से कृषि विभाग से जुड़े है। इसके पूर्व सिर्फ एक ही मौसम में परपंरागत विधि से धान की खेती करते थे, जिससे लागत की तूलना में आमदनी कम होती थी।

मंगल सोरेन मात्र 5वीं पास है। कृषि के नवीनतम तकनीक के जानकारी के प्रति जिज्ञासु होने के कारण आत्मा–कृषि विभाग से जुड़े एवं आत्मा द्वारा आयोजित किये जाने वाले प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण कार्यक्रमों में शामिल होते रहे जिससे उन्हें तकनीकी ज्ञान के साथ–साथ प्रखण्ड स्तरीय प्रसार कर्मी से मार्गदशन भी मिलता रहा। परिणामस्वरूप अभी के समय में मंगल सोरेन धान के अलावा सब्जी, दलहन की खेती कर सलाना 1.60 से 2.00 लाख तक आमदनी कर रहे है जो इनके परिवार के जीवन–यापन एवं आर्थिक जरूरतों को पूर्ण करने के लिए प्रर्याप्त है।

आत्मा–कृषि विभाग से मंगल सोरेन को उन्नत कृषि तकनीक की जानाकरी एवं मार्गदर्शन के साथ ही विभिन्न योजना के तहत बीज एवं उपादान प्राप्त कियें हैं।

इनके परिवार में कुल 6 सदस्य है, 2 बेटा है। विगत दिनों लाकडाउन की स्थिति में भी खेती में लगे रहने एवं उससे आमदनी का होने के कारण परिवार का भरण–पोषण करने में इन्हें दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ा है।

सफलता की कहानी

किसान का नाम	–	रविन्द्रनाथ महतो
पिता का नाम	–	लखीकान्त महतो
ग्राम	–	चन्द्ररेखा
पंचायत	–	उल्दा
प्रखण्ड	–	घाटशिला
जिला	–	पूर्वी सिंहभूम

रविन्द्रनाथ महतो एक शिक्षित किसान है। इन्होंने गेजुएशन तक की पढ़ाई पूरी की है। पढ़ाई पूरा होने के उपरान्त इनका रूझान खेती की ओर बढ़ा और खेती से ही अपने परिवार का भरण–पोषण करने लगे। पारा टीचर के पद पर अपने ही पंचायत के विद्यालय में नियुक्त हो गये। मानदेय कम होने के कारण शिक्षण कार्य के साथ–साथ इनका रूझान फिर खेती की ओर बढ़ा और खेती कार्य में लग गये। तकनीकी जानकारी का अभाव के कारण खेती का कार्य सूचारू रूप से नहीं कर पा रहे थे।

रविन्द्रनाथ महतो ने प्रखण्ड के कृषि विभागीय आत्मा कर्मी से संपर्क स्थापित किया। आत्मा कर्मियों ने उन्हें आत्मा द्वारा संचालित किसानोपयोगी योजना के बारे में जानकारी दी। आत्मा द्वारा संचालित प्रशिक्षण, परिभ्रमण में भाग लेने के उपरांत उन्हें कई तकनीकी जानकारी प्राप्त हुआ तब जाकर इन्होंने खरीफ मौसम में धान की खेती श्रीविधि तकनीक का प्रयोग किया जिससे उनका लागत कम और उत्पादन ज्यादा हुआ।

रबी मौसम में सब्जी की खेती करना भी प्रारम्भ कर दिये। आत्मा कर्मियों के सहयोग से 100X100 फीट तालाब का निर्माण भी कराया। सिंचाई की व्यवस्था होने के उपरांत रबी और गरमा मौसम में भी सब्जी की खेती प्रारम्भ कर दिये साथ ही मछली पालन भी। मछली पालन में कठिनाई होने पर आत्मा कर्मियों द्वारा मत्स्य विभाग से संपर्क स्थापित करा दिया गया।

रविन्द्रनाथ उन्नत नस्ल के देशी मुर्गा पालन का किये है। इस नस्ल के मुर्गा का बाजार में अच्छा मांग है जिससे इनको मुर्गा पालन से अतिरिक्त आय होता है। रविन्द्रनाथ महतो को खरीफ मौसम में धान से सालभर खाने के लिए चावल प्राप्त होता है जिससे 75–80 हजार रूपये का बचत होता है। रबी में टमाटर, फुलगोभी, पत्तागोभी की खेती किये है जिससे इनको 45–50 हजार रूपये की मुनाफा हुआ है। गरमा मौसम में नेनुआ, लौकी, झींगा, करेला की खेती करते है जिससे इनको 30–40 हजार रूपये आय प्राप्त हुआ। मछली पालन से 35–40 हजार रूपये आय प्राप्त हुआ। मुर्गा पालन से 25–30 हजार रूपये आय प्राप्त होता है। इस प्रकार रविन्द्रनाथ महतो को सलाना 2 से 2.50 रूपये आमदनी धान की खेती, सब्जी की खेती एवं मत्स्य पालन, मुर्गा पालन से हो जाता है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

परियोजना निदेशक, आत्मा

पूर्वी सिंहभूम, जमशेदपुर